भारत का EV बाजार बिक्री में उछाल

भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों का बाजार 2026 की शुरुआत के साथ ही नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ता दिखाई दे रहा है। ग्राहकों की रुचि अब पारंपरिक ईंधन से हटकर इलेक्ट्रिक विकल्पों की ओर बढ़ रही है। पहले जहां इस क्षेत्र में कुछ ही कंपनियों का दबदबा था, वहीं अब कई नए ब्रांड और मॉडल बाजार में प्रवेश कर चुके हैं। इससे प्रतिस्पर्धा तेज हुई है और ग्राहकों को ज्यादा विकल्प मिल रहे हैं। बढ़ती जागरूकता, ईंधन की कीमतों में उतार-चढ़ाव और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील सोच इस बदलाव को गति दे रही है। कुल मिलाकर EV बाजार अब शुरुआती चरण से निकलकर स्थिर विकास की ओर बढ़ता दिख रहा है।

बिक्री के आंकड़े और बाजार का विस्तार

हाल के महीनों में इलेक्ट्रिक कारों की मांग में लगातार वृद्धि देखी गई है, जो यह संकेत देती है कि उपभोक्ता अब नई तकनीक को अपनाने के लिए तैयार हैं। रजिस्ट्रेशन और डिलीवरी के आंकड़े बताते हैं कि शहरों के साथ-साथ छोटे नगरों में भी EV की स्वीकार्यता बढ़ रही है। चार्जिंग नेटवर्क का विस्तार और नई स्कीमों ने ग्राहकों का भरोसा मजबूत किया है। कीमतों में धीरे-धीरे संतुलन आने से भी मध्यम वर्ग के खरीदार इस सेगमेंट की ओर आकर्षित हो रहे हैं। यह रुझान केवल एक ट्रेंड नहीं, बल्कि ऑटो इंडस्ट्री के भविष्य की दिशा का संकेत माना जा रहा है, जहां इलेक्ट्रिक मोबिलिटी धीरे-धीरे मुख्यधारा का हिस्सा बन रही है।

नए ब्रांड और प्रतिस्पर्धा का असर

बाजार में नए खिलाड़ियों की एंट्री ने प्रतिस्पर्धा को और दिलचस्प बना दिया है। पहले सीमित विकल्प होने के कारण ग्राहक कुछ चुनिंदा मॉडलों तक ही सीमित रहते थे, लेकिन अब डिजाइन, रेंज और फीचर्स के आधार पर कई विकल्प उपलब्ध हैं। इससे कंपनियों को अपनी तकनीक, बैटरी क्षमता और कीमतों पर ज्यादा ध्यान देना पड़ रहा है। नई कंपनियों के आने से पुरानी कंपनियों को भी अपने पोर्टफोलियो को अपडेट करना पड़ रहा है, जिससे कुल मिलाकर ग्राहकों को बेहतर उत्पाद और सेवाएं मिल रही हैं। यह प्रतिस्पर्धा बाजार को संतुलित और गतिशील बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

तकनीक, चार्जिंग और उपयोगिता

EV बाजार की बढ़ती लोकप्रियता के पीछे तकनीकी सुधार एक बड़ा कारण है। बैटरी रेंज में वृद्धि, तेज चार्जिंग विकल्प और स्मार्ट कनेक्टिविटी फीचर्स ने इलेक्ट्रिक कारों को अधिक व्यावहारिक बना दिया है। शहरों में चार्जिंग स्टेशनों की संख्या बढ़ने से लंबी दूरी की यात्रा को लेकर ग्राहकों की चिंता कम हुई है। इसके अलावा, मेंटेनेंस लागत अपेक्षाकृत कम होने के कारण भी लोग EV को दीर्घकालिक निवेश के रूप में देखने लगे हैं। डिजिटल डिस्प्ले, मोबाइल ऐप इंटीग्रेशन और एडवांस सेफ्टी फीचर्स इस सेगमेंट को आधुनिक और उपयोगी बनाते हैं।

भविष्य की संभावनाएं और उपभोक्ता रुझान

आने वाले समय में EV बाजार के और मजबूत होने की संभावना जताई जा रही है। जैसे-जैसे नई मॉडल लाइन-अप बाजार में आएगी, ग्राहकों की पसंद और भी विविध होगी। विशेषज्ञ मानते हैं कि इलेक्ट्रिक वाहनों की हिस्सेदारी धीरे-धीरे कुल ऑटो बिक्री में उल्लेखनीय स्तर तक पहुंच सकती है। सरकार की नीतियां, इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश और तकनीकी विकास इस बदलाव को स्थायी रूप दे सकते हैं। विश्व इलेक्ट्रिक कार बाजार की बात करें तो चीन में पिछले साल की तुलना में 20 फीसदी की गिरावट आई है। उत्तरी अमेरिका में 33 प्रतिशत की भारी गिरावट दर्ज की गई। अलबत्ता यूरोप में वृद्धि हुई है।

मॉय फर्स्ट राइड

स्टेयरिंग के पीछे मेरा आत्मविश्वास

जब मैंने पहली बार कार की चाबी हाथ में ली, तो वह सिर्फ एक वाहन की चाबी नहीं थी, बल्कि जिम्मेदारियों का पूरा गुच्छा था। मैं एकल परिवार में रहती हूं और मेरे पति का काम ऐसा है कि उन्हें ज्यादातर समय शहर से बाहर रहना पड़ता है। ऐसे में घर, बच्चे, स्कूल, बाजार और जिंदगी की छोटी-बड़ी जरूरतें- सब कुछ मेरे कंधों पर आ जाता है। पहले यह सब ऑटो, टैक्सी या पड़ोसियों की मदद से चलता था, लेकिन हर बार किसी पर निर्भर रहना मन को कचोटता था।

एक दिन स्कूल से फोन आया- बच्चे की तबीयत अचानक खराब हो गई थी। उस दिन मुझे सबसे ज्यादा अपनी असहायता का एहसास हुआ। उसी शाम मैंने तय कर लिया कि अब कार चलाना सीखना कोई शौक नहीं, जरूरत है। अगले ही हफ्ते ड्राइविंग स्कूल जॉइन किया। पहले दिन स्टेयरिंग पकड़ते हुए हाथ कांप रहे थे। एक्सेलेरेटर और ब्रेक के बीच का संतुलन जैसे जीवन के संतुलन की परीक्षा ले रहा था। इंस्ट्रक्टर की आवाज, पीछे से आते हॉर्न और मन के भीतर का डर सब मिलकर मुझे कई बार रुकने को मजबूर करते रहे, पर हर रुकावट के बाद एक नई हिम्मत भी पैदा होती थी। बच्चों की स्कूल बस पकड़वाने की जल्दी, सब्जी मंडी के भारी थैले और देर रात तक जागते हुए पति की आवाज फोन पर ये सब मुझे आगे बढ़ाते रहे। कुछ दिनों बाद डर धीरे-धीरे आत्मविश्वास में बदलने लगा। पहली बार जब मैं अकेले बच्चों को स्कूल छोड़कर लौटी, तो लगा जैसे मैंने कोई बड़ी जीत हासिल कर ली हो। धीरे-धीरे सड़कें मुझे डराने के बजाय परिचित लगने लगीं। ट्रैफिक सिग्नल, यू-टर्न और तंग गलियां अब चुनौती नहीं रहीं। बच्चों की आंखों में भी गर्व झलकने लगा- "मम्मी अब खुद गाड़ी चलाती हैं।" यह एक छोटा सा वाक्य मेरे लिए बड़ी उपलब्धि बन गया। कार चलाना मेरे लिए सिर्फ एक कौशल नहीं रहा, यह मेरी आजादी का प्रतीक बन गया। अब जरूरत पड़ने पर किसी को फोन नहीं करना पड़ता, किसी एहसान का बोझ नहीं रहता।

बारिश हो या धूप, समय पर अस्पताल पहुंचना हो या अचानक कोई जरूरी काम-स्टेयरिंग के पीछे बैठते ही मुझे अपने फैसलों पर भरोसा होने लगा। आज जब मैं सड़क पर कार चलाती हूं, तो मुझे लगता है कि मैंने सिर्फ गाड़ी नहीं सीखी, मैंने खुद पर विश्वास करना सीखा है। यह अनुभव मुझे हर दिन याद दिलाता है कि परिस्थितियां चाहे जैसी हों, अगर हौसला हो तो रास्ते खुद बन जाते हैं।

-नीलम, कानपुर

क्यों एडवेंचर बाइक होती है परफेक्ट टूरिंग मशीन!

लंबी दूरी की बाइक यात्राएं सिर्फ मंजिल तक पहुंचना नहीं, बल्कि हर मोड़, हर रास्ते और हर चुनौती को महसूस करने का नाम है। ऐसे सफर में बाइक सिर्फ एक साधन नहीं, बल्कि आपका सबसे भरोसेमंद साथी बन जाती है। यही वजह है कि एडवेंचर बाइकों की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। ये बाइक उन राइडर्स के लिए बनाई जाती है, जो हाईवे की रफ्तार, खराब सड़कों की चुनौती और ऑफ-रोड रोमांच तीनों को एक साथ जीना चाहते हैं। एडवेंचर बाइक का सबसे बड़ा प्लस पॉइंट है इसकी ऑल-राउंडर नेचर। मजबूत बॉडी, संतुलित चेसिस और एडवांस टेक्नोलॉजी के साथ ये बाइक लंबी दूरी की राइडिंग के लिए पूरी तरह तैयार रहती है। चाहे कई सौ किलोमीटर का हाईवे रन हो या अचानक आया खराब रास्ता-एडवेंचर बाइक हर स्थिति में भरोसा देती है।

एडवांस सस्पेंशन

लंबी यात्राओं में सड़क की हालत सबसे बड़ा रोल निभाती है। इसी को ध्यान में रखते हुए एडवेंचर बाइकों में लंबा ट्रैवल सस्पेंशन दिया जाता है, जो गड्ढों, उबड़-खाबड़ रास्तों और ऑफ-रोड सतह को आसानी से संभाल लेता है। कई बाइकों में इलेक्ट्रॉनिकली एडजस्ट होने वाला सस्पेंशन भी मिलता है, जो लोड और राइडिंग कंडीशन के अनुसार खुद को ढाल लेता है। नतीजा बेहतर स्टेबिलिटी, कम थकान और ज्यादा आत्मविश्वास।

एयरोडायनामिक डिजाइन

लंबी हाईवे राइड्स में हवा की मार राइडर को जल्दी थका देती है। एडवेंचर बाइकों में दिए गए बड़े फेयरिंग और ऊंची विंडशील्ड हवा को राइडर से दूर मोड़ देते हैं। इससे न सिर्फ शरीर पर दबाव कम पड़ता है, बल्कि लंबी दूरी तय करने के बाद भी राइडर तरोताजा महसूस करता है।

बड़ा फ्यूल टैंक

एडवेंचर बाइक की पहचान उसका बड़ा फ्यूल टैंक भी है। लंबी दूरी की राइडिंग में बार-बार पेट्रोल पंप ढूंढना परेशानी बन सकता है। ज्यादा फ्यूल कैपेसिटी और बेहतर माइलेज के चलते ये बाइक दूरदराज इलाकों में भी निश्चिंत होकर चलाने का भरोसा देती हैं।

रिलैक्स राइडिंग पोजिशन

सीधी और रिलैक्स बैठने की पोजिशन एडवेंचर बाइक को टूरिंग के लिए आदर्श बनाती है। चौड़े हैंडलबार, कंफर्टेबल सीट और सही जगह लगे फुट पेग्स शरीर के वजन को संतुलित रखते हैं। इससे कमर, घुटनों और कंधों पर दबाव कम पड़ता है और लंबी राइड्स आसान हो जाती हैं।

स्मार्ट इलेक्ट्रॉनिक्स

आधुनिक एडवेंचर बाइकों में ट्रैक्शन कंट्रोल, राइड मोड्स, क्रूज कंट्रोल और नेविगेशन जैसी सुविधाएं आम हो चुकी हैं। ये फीचर्स न सिर्फ राइड को सुरक्षित बनाते हैं, बल्कि थकान भी कम करते हैं। खासकर लंबी यात्राओं में।

विदेश में ड्राइव प्लानः IDP को न करें नजरअंदाज

काम की बात

इंटरनेशनल ट्रिप की तैयारी करते वक्त हमारी प्राथमिकता अक्सर फ्लाइट टिकट, होटल बुकिंग और वीजा पर ही टिकी रहती है। घूमने की जगहों की लिस्ट बन जाती है, जरूरी गाइडलाइंस भी देख ली जाती हैं, लेकिन अगर योजना विदेशी धरती पर खुद स्टेयरिंग संभालने की हो, तो एक बेहद अहम दस्तावेज अक्सर हमारी ट्रैवल चेकलिस्ट से छूट जाता है। यही दस्तावेज है इंटरनेशनल ड्राइविंग परमिट (IDP)। यह सिर्फ एक औपचारिक कागज नहीं, बल्कि आपकी ड्राइविंग पहचान का अंतर्राष्ट्रीय प्रमाण है, जो यह साबित करता है कि आप भारत में अधिकृत चालक हैं और दुनिया के कई देशों में कानूनी रूप से वाहन चला सकते हैं। आज के समय में इंटरनेशनल सेल्फ-ड्राइव ट्रैवल का क्रेज तेजी से बढ़ रहा है। ऐसे में IDP आपकी यात्रा को न केवल आसान बनाता है, बल्कि किसी भी कानूनी परेशानी से भी बचाता है। *-फीचर डेस्क*

IDP क्या और क्यों है जरूरी?

इंटरनेशनल ड्राइविंग परमिट आमतौर पर जारी होने की तारीख से एक साल तक वैध रहता है। विदेश में ड्राइव करते समय इसे अपने भारतीय ड्राइविंग लाइसेंस और पासपोर्ट के साथ रखना अनिवार्य होता है। कई देशों में बिना IDP के न तो कार किराए पर मिलती है और न ही इलीगल तरीके से ड्राइव करने की अनुमति। कुछ जगहों पर भारी जुर्माना या ड्राइविंग पर पूरी तरह प्रतिबंध भी लगाया जा सकता है।

अच्छी बात यह है कि अब IDP के लिए आवेदन प्रक्रिया काफी आसान हो गई है। Ministry of Road Transport and Highways के परिवहन (Parivahan) पोर्टल के जरिए आप घर बैठे ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

कौन कर सकता है आवेदन?

भारत में IDP के लिए आवेदन करने के लिए कुछ बुनियादी शर्तें पूरी करनी होती हैं। आवेदक का भारतीय नागरिक होना जरूरी है और उसके पास वैध भारतीय ड्राइविंग लाइसेंस होना चाहिए। यह लाइसेंस आवेदन की तारीख से कम से कम छह महीने तक वैध होना चाहिए। साथ ही, आवेदक की न्यूनतम आयु 18 वर्ष होनी अनिवार्य है।

IDP के लिए जरूरी दस्तावेज

आवेदन प्रक्रिया के दौरान कुछ अहम दस्तावेजों की जरूरत पड़ती है। इनमें भरा हुआ IDP एप्लीकेशन फॉर्म (Form 4A), वैध भारतीय ड्राइविंग लाइसेंस की कॉपी, पासपोर्ट की कॉपी (पर्सनल डिटेल और वीज़ा पेज), हाल की पासपोर्ट साइज फोटो, वीजा की सेल्फ-अटेस्टेड कॉपी और एड्रेस प्रूफ शामिल हैं। सभी डॉक्यूमेंट्स सही और स्पष्ट होने चाहिए, ताकि आवेदन में कोई देरी न हो।

फीस और वैधता

IDP बनवाने के लिए 1,000 रुपये की फीस देनी होती है। यह परमिट जारी होने की तारीख से एक साल तक वैध रहता है। यदि भविष्य में दोबारा इसकी जरूरत पड़े, तो नई आवेदन प्रक्रिया के जरिए इसे फिर से बनवाना होता है। भुगतान आप UPI, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड या नेट बैंकिंग से कर सकते हैं। कुछ मामलों में आधार वेरिफिकेशन या स्थानीय RTO में फिजिकल वेरिफिकेशन की जरूरत भी पड़ सकती है।

आसान प्रक्रिया है आवेदन की

परिवहन सारथी पोर्टल पर जाकर अपने राज्य का चयन करें, जहां से आपका ड्राइविंग लाइसेंस जारी हुआ है। ड्राइविंग लाइसेंस सेक्शन में जाकर इंटरनेशनल ड्राइविंग परमिट के विकल्प पर क्लिक करें। इसके बाद ड्राइविंग लाइसेंस नंबर और जन्मतिथि दर्ज करें, जरूरी डॉक्यूमेंट्स अपलोड करें और फीस का भुगतान कर दें।

विदेश में IDP इस्तेमाल करते समय ध्यान रखें

विदेश में ड्राइव करते समय हमेशा अपना भारतीय ड्राइविंग लाइसेंस और IDP साथ रखें। जिस देश में जा रहे हैं, वहां के ट्रैफिक नियमों और रोड साइन की जानकारी पहले से ले लें। अगर कार किराए पर ले रहे हैं, तो रेंटल कंपनी को IDP के बारे में जरूर बताएं। कुछ देशों में विदेशी ड्राइवरों के लिए अलग उम्र सीमा या नियम हो सकते हैं।